सचेतन

सीना-पिरोना

(राजकीय बालिका गृह की बालिकाओं के साथ सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम आधारित रिपोर्ट)

सचेतन

(शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था)

कोटा-राजस्थान

जीवन के उतार चढ़ाव में कई बार लोग हमारा साथ छोड़ देते हैं. कुछ साथ रहता है तो वो होता है हमारा ज्ञान, अनुभव और हुनर. इन्हें कोई नहीं छीन सकता. ये पूँजी समान होते हैं. यदि इन्हें तराशा जाता रहे तो मुश्किलों में राहें आसान हो जाती हैं और परिस्थितियों का सामना करने का हौसला भी बना रहता है. कुछ ऐसे ही इरादों के साथ हमने राजकीय बालिका गृह, नान्ता की बालिकाओं के साथ उनके सिलाई के हुनर को नवीन आयाम देने का प्रयास किया.

भारती गौड़
(सचिव)
सचेतन

सचेतन

सीना-पिरोना

राजकीय बालिका गृह की बालिकाओं के साथ सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम आधारित रिपोर्ट

मार्च 2015

कोटा (राजस्थान)

सीना-पिरोना

किशोरी बालिका आवासिनियों के साथ

कौशल निर्माण हस्तक्षेप

(राजकीय बालिका गृह, नान्ता)

कार्यक्रम रिपोर्ट

नवम्बर 2014-फ़रवरी 2015

सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता विभाग, कोटा को

प्रस्तुत

(शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था)

कोटा

www.sachetan.org
sachetansociety@gmail.com
facebook-sachetansociety
(Registration no. 143/Kota/2012-13 under Rajasthan Societies Registration Act 1958)

सचेतन

सिलाई ही क्यों?

संस्थागत तौर पर इस प्रश्न का कई बार सामना करना पड़ा. हमारी सोच स्पष्ट थी कि उसी हुनर का प्रशिक्षण हो जिसके अंकुर उनमें हों...जिससे वे परिचित हों.....जिससे वे स्वयं को जोड़ने में झिझकें नहीं.....जिसे वे बालिका गृह से जाने के बाद अपने तुरंत के परिवेश में भी आगे ले जा सकें. उनके सीखने में निरंतरता बनी रहे. आवश्यक सामग्रियों यथा कच्चे माल या उपकरण की स्थानीय बाज़ार से सहज उपलब्धता रहे. सबसे महत्वपूर्ण बात कि ज़रुरत पड़ने पर उस हुनर को आजीविका का साधन भी बना सकें.

और फिर क्यों ना हो...ये माध्यम सिर्फ हुनर या आजीविका से ही जुड़ा नहीं है बल्कि सदियों से सिलाई-कढ़ाई-बुनाई ने औरतों को अपने-अपने घरों से निकल कहीं इकट्ठा बैठ कर अपने एकाकीपन को दूर करने, कुछ नया सृजन करने की भावना को आश्रय देने का काम भी किया है. माँ-बहन-पत्नी-बेटी के रूप में वे युगों से हर टांके...हर फंदे में अपनों के लिए कहीं एक चिंता, तो कहीं एक इच्छा, और कहीं एक सपना पिरोती आयीं हैं.

सीना पिरोना है धंधा पुराना,
दे दो हमें दुनिया गर रफू है कराना....

प्रशिक्षण की विधा व सामग्री

कुछ जानती थीं कि 'हाँ सिलाई होती है', कुछ ने कभी सिलाई मशीन देखी थी तो कुछ ने कभी सिला था...तो कुछ के पास ये हुनर था कि वे सीख सकती थीं. जिन्होंने सीखा हुआ था उनके लिए निरंतरता बनी रहे व जो नहीं जानती थीं उन्हें सीखने का मौका मिले- ये आधार पर्याप्त था कि एक सिलाई कार्यशाला की जाये. इसी सोच के साथ सचेतन द्वारा 'स्किल बिल्डिंग प्रोग्राम' तैयार किया गया और 17 नवम्बर से राजकीय बालिका गृह, नान्ता की किशोरी बालिकाओं के साथ सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गयी. प्रारंभिक तौर पर तीस दिन के सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में 12 बालिकाओं के साथ काम शुरू किया गया.

इस प्रशिक्षण के मुख्य **उद्देश्य** इस प्रकार थे:-

- परिधान सिलाई के अलावा अन्य चीज़ों जैसे पर्स, फैब्रिक -फोल्डर, बैग, कुशन कवर, मोबाईल कवर, नैपकिन्स, एप्रन जैसी चीज़ों के माध्यम से सिलाई सिखाना जिसमें सिलाई की विभिन्न तकनीकों जैसे, कंसील्ड स्टिच, गोट/पाईपिंग लगाना, सजावटी डोरी-फुंदने बनाना, बॉर्डर लगाना इत्यादि प्रमुख था.
- ये प्रशिक्षण सिर्फ सिलाई मशीन चलाना सिखाने का नहीं था या नए कपड़े से कुछ बनाना ही नहीं था, बल्कि उस नज़रिए को भी विकसित करना था कि कैसे पुराने कपड़े यथा, साड़ियों, कमीज़ों, पैंट, या दुप्पटों से कैसे क्या उपयोगी चीज़ बनायीं जा सकती है.
- क्या बनाया जाये? और कैसे बनाया जाये? को सोचने देना...उनके आइडीया को विस्तार देना, कॉम्बिनेशन, कैसा कपडा, किस रंग का धागा, सब कुछ सोचपाने को सहारा देना व अंततः उसको करने में मदद करना.
- इस बात को समझा पाना कि एक गुणवत्तापूर्ण सिलाई को कैसे सुनिश्चित करेंगें? 'प्रोडक्ट-फिनिशिंग' पर बात करना व उसके तरीके बताना.

प्रशिक्षण की विधा व सामग्री

प्रशिक्षण में शुरुआत में सीखने वालों के दो तरह के समूह बनाये थे. परन्तु आगे चल कर तीन प्रकार के समूह बन गए थे.

1. पहला समूह उन बालिकाओं का था जिन्हें थोड़ी-बहुत सिलाई आती थी व वे सिलाई-मशीन चलाना जानती थीं.
2. दूसरा समूह उन बालिकाओं का था जिनके लिए सिलाई मशीन का अनुभव पहली बार हो रहा था.

दोनों ही समूह के साथ पहले सात दिन मशीन के साथ अभ्यस्त होने का रखा गया व इस प्रक्रिया के तहत सीधी सरल सिलाई की आवश्यकता वाली चीज़ों को बनाया गया जैसे; पुरानी साड़ी के थैले इत्यादि. इसके अगले चरण में अलग-अलग साइज़ के थैले/पोउच सिलने के लिए दिए गए व उनकी सिलाई की सफाई पर ध्यान दिया गया. जैसे -जैसे बालिकाएं सीखतीं गयीं वे पहले समूह में जुड़ती चलीं गयीं. पहला समूह जो की अपेक्षाकृत सीखा हुआ था उसको सात दिन के बाद पुरानी चादरों व साड़ियों से एप्रन बनाने के लिए दिए गए.

प्रारंभ में ड्राफ्टिंग और कटिंग का काम संस्था संदर्भ व्यक्ति द्वारा किया गया व धीरे-धीरे ये काम भी कुछ बालिकाओं द्वारा किया जाने लगा. करीब 30-40 एप्रन बनाने के बाद नए कपड़ों के एप्रन, शगुन पोउच, पोटली पर्स व फैब्रिक फ़ोल्डर्स बनाये गए. महीने भर के अन्दर कुशलता और नेतृत्व के गुण भी मुखर होने लगे थे. peer-learning भी काम करने लगी थी. अब सिर्फ दो समूह न रह कर कई छोटे समूह बन गए थे जिनमे एक-दो निपुण बालिकाओं के साथ अन्य बालिकाओं को जोड़ दिया गया था.

चूँकि प्रशिक्षनार्थी समूह में शिक्षित-साक्षर व निरक्षर सभी प्रकार की बालिकाएं थीं अतः की एक विधा नहीं चल सकती थी खासकर नोट्स देने जैसी. इसलिए सभी कुछ demonstratios व 'do it yourself' की विधा के साथ किया गया. करो-सुधारो-करो यही एक विधा थी जिसका पूर्ण उपयोग किया गया. कक्षा स्वरुप में लगातार बैठने की हिम्मत कई बार जवाब दे जाती थी. अतः बीच-बीच में रचनातक गतिविधियों को भी कराया जाता था. संदर्भ व्यक्ति के तौर पर हमारा काम अब इस बात पर ध्यान देना था कि हर बालिका के पास कोई-न-

कोई assignment रहे और निर्धारित समय के अंदर ही वो उसे पूरा भी करे...वो भी सफाई के साथ. गलत बने काम को उधेड़ने में भी कोई कमी नहीं रखी. कई बार ऐसा हुआ कि पूरा-पूरा दिन वे सिलती-उधेड़तीं-सिलतीं और फिर उधेड़ना पड़ता. पर यही तो सिखाना था की 'सिलना और अच्छा सिलने' में क्या अंतर होता है...और अगर आप किसी और के लिए सिलेंगी तो कीमत गुणवत्ता और सफाई के लिए ही मिलेगी.

प्रशिक्षण के लिए सिलाई मशीनें पहले से ही बालिका गृह में मौजूद थीं. काफी समय से उनका उपयोग न होने के कारण वे सही नहीं चल रहीं थी. अतः, उनकी थोड़ी मरम्मत जैसे, किसी में सुई बदलना, पुर्जों में तेल डालना, सफाई करना, शटल-बोबिन इत्यादि बदलने से काम करने लायक बना लिया गया. यूँ पुरे प्रशिक्षण अवधि में सिलाई मशीनों का बिगड़ना-मरम्मत होना चलता रहा. इस स्थिति से हम ये सन्देश भी देने में सफल रहे कि इसी तरह जीवन में दिक्कतें आती रहती हैं पर यदि दृढ निश्चय हो तो सफलता मिलती ही है. इन छोटी-छोटी कठिनाईयों या अवरोधों से घबराना नहीं है बल्कि उसका आकलन कर लड़ने की रणनीति बनानी है.

अन्य सामग्री जैसे कपड़ा, धागे, मशीन के पूर्जे और संदर्भ व्यक्ति संस्था द्वारा उपलब्ध कराये गए. संस्था द्वारा कपड़ा अपने स्तर पर तथा अन्य सुधीजनों से आग्रह कर जुटाया गया व बालिकाओं को अभ्यास हेतु दिया गया. चूँकि पूरा ध्यान सिखाने पर था अतः, कभी भी कपड़ा बिगड़ जाने के डर को हावी नहीं होने दिया. उद्देश्य था कि कपड़ा-कैंची-सुई से जैसे चाहो प्रयोग करो पर खुद सोचो कि क्या और कैसे बनाना है. संस्था के दो सदस्यों द्वारा संदर्भ व्यक्ति के रूप में पूर्णतया स्वैछिक रूप में अपनी सक्रीय सहभागिता दी गयी व प्रशिक्षण पूर्ण कराया गया.

प्रशिक्षण कक्ष में सीखतीं बालिकाएं

परिणाम

ग्रामीण परिवेश की इन बालिकाओं में से कुछ ने जस का तस सीखा, तो कुछ ने अपना नवाचार दिखाया. कुछ हम सोच कर गए थे कुछ कमाल उन्होंने कर दिखाया. मोबाइल कवर, शगुन के पाउच, पेन ड्राइव केस, बटुए.....और भी बहुत कुछ. कतरनें, लेस, फुंदने, डोरियाँ, गोटा, मोती, रंगीन धागे, कैंची की चाल, सिलाई मशीन की रफ़्तार, सुई का टूटना, शटल की मरम्मत, पुर्जों में तेल.... और इन सबके बीच तल्लीनता से काम करती लड़कियां...मानों अपने सपनों को सिल रहीं थीं.

वस्तुतः, परिणाम दो तौर पर देखे जा सकते हैं. बालिकाओं के स्तर पर व संस्था के स्तर पर. बालिकाओं को अवसर मिला तो उन्होंने सीखा. इसका संकेत इस बात से मिलता है कि प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद बचे हुए कपड़े के टुकड़े जो बालिका गृह में छोड़ दिए थे उनका सदुपयोग किया गया व स्व प्रेरणा से उन्होंने कुछ नवाचार कर हमारी अगली विजिट में हमें दिखाया गया. साथ ही कुछ हद तक सीखने-सिखाने का एक माहौल बालिका गृह में बनाने में मदद कर पाए. संस्था के तौर पर हमने प्रशिक्षण की बारीकियों को सीखा. बालिकाओं की मनःस्थिति समझना, उसका सीखने का तरीका समझ कर अपने सिखाने के तरीके में बदलाव करना..इत्यादि के बारे में स्पष्टता हुई.

प्रत्यक्ष रूप में तो सिलना बनाना ही सीखा पर कुछ बातें अनुभव स्तर पर भी प्रगट हो रहीं थी. सिलाई के लिए बैठना अर्थात पूर्व-तैयारी करके बैठना अर्थात नियोजन करना सीखना, लम्बी (2-3 घंटे) sitting देना मतलब धैर्य रखना और मन को केन्द्रित (concentration/focused) रखना सीखना जैसे गुण अनिवार्यतः पनप रहे थे. सिलाई सीखना कहीं न कहीं 'छूट कर घर जाने व अपनों से मिलने' की उद्विग्नता के साथ परिस्थितियों पर बस न चल पाने की स्थिति में उपजते चिड़चिड़ेपन के बीच रचनात्मक रूप से समय व्यतीत करने का माध्यम बन पड़ा था.

बालिकाओं के साथ अपनत्व का रिश्ता बन पाना ताकि जब वे यहाँ से चली भी जाएँ तो संस्था उनके साथ आगे भी काम कर सके, उन्हें परामर्श उपलब्ध करा सके- यही संस्थागत उपलब्धि बनी. यद्यपि प्रशिक्षण के चलते कुछ बालिकाएं बालिका गृह से चली भी गयीं. जिससे ये स्पष्टता बनी कि यहाँ के लिए छोटी अवधि के module बनाये जायें ताकि प्रशिक्षण का चक्र पूर्ण हो सके. संस्था के तौर पर आगे अन्य बालिकाओं के साथ इस प्रकार के नियमित प्रशिक्षण करने का प्रस्ताव विभाग को देना चाहेंगें ताकि सीखने-सिखाने की निरंतरता बनी रहे व संस्था अपने अनुभव, कौशल व संसाधनों के साथ किशोरी बालिकाओं के 'देखभाल व संरक्षण' के लक्ष्य को पाने में राजकीय बालिका गृह को सहयोग देती रहे.

प्रदर्शनी: 'सीना-पिरोना' (कला दीर्घा, कोटा)

प्रदर्शनी प्रशिक्षण का अंग नहीं थी परन्तु जैसे-जैसे प्रशिक्षण बढ़ता गया, चीज़ें तैयार होने लगीं तो बालिकाओं द्वारा तैयार सामान को प्रदर्शनी हेतु सोचा गया. सचेतन व राजकीय बालिका गृह के संयुक्त तत्वाधान में सचेतन द्वारा प्रदर्शनी को अपने वार्षिक कार्यक्रम का हिस्सा बनाते हुए 'सीना-पिरोना' के नाम से समस्त उत्पादों की दो दिवसीय प्रदर्शनी का 7-8 फ़रवरी 2015 को कला दीर्घा, कोटा में आयोजन किया गया.

प्रदर्शनी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्रीमान प्रेम प्रकाश, प्रधान आयकर आयुक्त कोटा, व विशिष्ट अतिथि श्रीमान के.एन.टंडन, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट व बिसनेस हेड डीसीएम श्रीराम लिमिटेड कोटा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया. प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर बालिकाओं के प्रशिक्षण की जानकारी सभी के साथ बांटी गयी. इस अवसर पर श्रीमती सविता कृश्निया सहायक निदेशक-ज़िला बाल संरक्षण इकाई; सुश्री अंशुल मेहंदीरत्ता, अधीक्षक राजकीय बालिका गृह; बालिका गृह काउन्सलर,वार्डन तथा गार्ड्स व विशेष आग्रह व अनुमति पर सभी प्रशिक्षनार्थियों को आमंत्रित किया गया था. इसके अतिरिक्त श्रीमती पुखराज भाटिया, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति, व सदस्य श्री विमल जैन भी उपस्थित थे.

संस्था सचिव डॉ. भारती गौड़ द्वारा उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्था द्वारा राजकीय बालिका गृह में अब तक किये गए प्रयासों से अवगत कराया तथा प्रदर्शनी के बारे में जानकारी दी. संस्था द्वारा इस अवसर पर प्रशिक्षनार्थी बालिकाओं को मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व संस्था अध्यक्ष श्री प्रभाकर शर्मा द्वारा प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया गया. कोटा शहर के अनेक गणमान्य नागरिक दो दिन प्रदर्शनी देखने के लिए आते रहे. प्रदर्शनी में अपने द्वारा बनाये सामानों को लगा देख व जिस तरह से उनको 'display' किया गया था उन्हें देख बालिकाएं अचंभित व प्रसन्न थीं. अपने सामने अपने सामानों की लोगों द्वारा की जा रही प्रशंसा उनका उत्साहवर्धन कर रही थीं. दो दिन चली इस प्रदर्शनी में कोटा के नागरिकों ने भाग लिया व अपने सहयोग की भी पेशकश की. पूरा दिन बालिकाएं प्रदर्शनी में घूमी, अतिथियों से बातचीत की, संस्था के सदस्यों से मिलीं, सबको प्रभावित किया. बालिकाओं की प्रशिक्षण व प्रदर्शनी को लेकर की गयी प्रतिक्रियों को आगे दिया गया है.

प्रदर्शनी की झलकियाँ

प्रशिक्षनार्थी बालिकाओं को प्रमाण पत्र वितरण

मुख्य अतिथि श्री प्रेम प्रकाश, प्रधान आयकर आयुक्त कोटा, तथा विशिष्ट अतिथि श्री के.एन.टंडन, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट व बिसनेस हेड डीसीएम श्रीराम लिमिटेड कोटा द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त करती बालिकाएं.

सचेतन टीम एवं बालिका गृह टीम

सचेतन

प्रशिक्षणार्थी बालिकाओं की प्रतिक्रियाएं

यहां आने का दिन 29 अक्टूबर, सब कुछ बहुत अलग व नया। पूरे दिन बस आगे क्या होगा कि चिंता। कुछ दिन बीते पर दिन बहुत लम्बे और बोरिंग थे। न कुछ करने को था ना सिखने को। जब अंशुल मैम से बात हुई तो उन्होनें कहा सिलाई करो, अपनी पढाई जारी रखो तो मन लग जाएगा। चूंकि पढ़ना मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगता है तो उनका प्रस्ताव मैंने स्वीकार कर लिया और जब सिलाई की कक्षा शुरु हुई 17 नवम्बर से तो दिन अच्छी तरह से कटने लगे। तब महसूस हुआ कि जो सीखा जा रहा है, भविष्य के लिए कितना जरूरी व लाभकारी है। भारती व सुनिता मैम ने बहुत प्यार व विश्वास के साथ काम शुरु करवाया जिसमें हमने एप्रिन, पेनड्राइव किट, पाउच, बैग सिलना सीखा। इनमें हमने बेकार सामान को सही उपयोग में लेना सीखा। दिन भर सिलाई, हंसी मजाक दिन इतने आसानी से निकले की कुछ पता ही नहीं चला साथ ही बहुत कुछ सीखते भी चले गये। आज एक हुनर पास है मन में विश्वास पैदा हुआ कि अगर मुश्किल वक्त आया तो लड़ लेंगें। बहुत सुखद रहा इन दिनों का ये अनुभव।

मे रीना सुमन बालिका गृह मे रहती हू मुझे भारती दीदी के साथ बोहत अच्छा लगा मैने उनसे सिलाई सीखी उन्होने मुझे सिलाई मे मोबाईल कवर ऐप्रिन पौकिट थैले और सजावट सिकायी मैं चाहती हु कि दीदी आगे भी आये हम सब को और जो उनको आता है वो सीखाये.

में दुलारी यहाँ पर मेरा मन नही लगता था परन्तु जब से आप यहाँ आये तो हमे बहुत अच्छा लगा दिनाक 17 नवम्बर हमारे दिन ऐसे निकले हमे पता हि नही चला आपने हमे ऐप्रिन, पोकिट, थैले मोबाइल कवर आदि कुछ चिजे सिखाई हो आगे तक ऐसे हि सिखाते रहना भारती दीदी यहा आयी और उनके साथ सुनिता दीदी भी आतीथी इन दोनो दिदीयो ने मिलकर हमे बहुत कुछ सिखाया अलग अलग प्रकार के ऐप्रिन उनमे डिजायन आप इस प्रकार कि चिजे आगे भी सिखाते रहे तथा और भी नईनई कुछ चीजे सिखाते रहना आगे भी आप इस संस्था मे आते रहना हमसे जुडे रहना हम आगे बढने की उम्मीद नही थी परन्तु हमे भारती दिदी द्वारा कहा 10वी का फोर्म भरवाया गया

हम नारी निकेतन हैं हम सब यहाँ रहते हैं यहाँ अनेक प्रकार के उत्सव मनाये जाते है इसी दौरान, 17 नवम्बर को यहाँ सचेतन संस्था की भारती दीदी, सुनिता दीदी और उनकी संस्था के सदस्यों के द्वारा हम सब को सिलाई में मोबाइल कवर ऐप्रीन, कटींग, पोकेट, थैले, और, सजावट करने के अनेक तरीके हमको सीखाये गयें, उन दीनो हमको पता ही नही चल की हम सब को इतना अच्छा लगा कि और हम चाहते है कि दीदी और उनके संस्था के सदस्य हम सब से जुड़े रहें आगे भी व हम सब को गाईड करते रहें. हम हमेशा यहाँ आने वाले अनेक संस्था के सदस्यो को यहाँ के स्टॉफ के यहाँ के अधिकारीयो की तरफ से आप सब को धन्यवाद हम सब लड़कीया और उनकी संस्था सदस्यों के सदस्यों ने भारती दीदी और सुनिता नर्मदा लीना दीदी हम चार लड़कियो को 10 वी का फोर्म भरवाया हमें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया

प्रशिक्षणार्थी बालिकाएं

1. अलामुनी
2. दुलारी
3. रक्षारानी
4. रीना
5. ममता
6. ज़ेबा
7. नेहा
8. निशा
9. टिंकू
10. अनीता (1)
11. अनीता (2)
12. आरती
13. सोनू

आभार

.....और ये सब सफल करने में सहयोग के लिए बालिका गृह अधीक्षक सुश्री अंशुल जी और उनके स्टाफ़ का सचेतन टीम हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिन्होंने बालिकाओं को प्रशिक्षण हेतु अनुमति और संस्थान में मौजूद सिलाई मशीनें उपलब्ध करायीं. स्टाफ़ से उषा जी, रजनी, हिना, रानी, संजू, कमलेश एवं अन्य गार्ड का सहयोग भी अतुलनीय रहा जो अपने कार्य से बीच-बीच में प्रशिक्षण कक्ष में आकर बालिकाओं का उत्साह वर्धन करती रहतीं व अपने सुझाव भी देतीं. सचेतन संदर्भ व्यक्ति सुनीता जैन का सबसे बड़ा सहयोग रहा जिनके अनुभव, हुनर और दो माह तक निरंतर उपलब्धता ने परियोजना की गुणवत्ता को बढ़ा दिया. साथ ही सचेतन के उन शुभचिंतकों का भी हम आभार व्यक्त करते हैं जिन्होनें नए-पुराने कपड़े/ साड़ियाँ/ चादरें इत्यादि अभ्यास हेतु उपलब्ध करायीं साथ ही उन सभी संस्था-मित्रों को धन्यवाद जिनके वित्तीय सहयोग से हम बालिकाओं को सिखाने हेतु इस प्रशिक्षण को आयोजित एवं पूर्ण कर सके. साधुवाद.

सचेतन टीम.

सचेतन

सचेतन (सोसाइटी फ़ॉर रिसर्च, एजुकेशन एंड ट्रेनिंग) राजस्थान संस्था पंजीकरण अधिनियम 1958 के तहत पंजीकृत कोटा राजस्थान स्थित एक नव गठित स्वयंसेवी एवं अलाभकारी संस्था है | "सचेतन" संस्था किशोरी बालिकाओं, महिलाओं के साथ सेल्फ (SELF) अर्थात आत्म / स्वयं को समझने (Exploring) , स्व-नेतृत्व (Leading) और स्व-देखभाल (Fostering) की संकल्पना की रणनीति पर काम करती है | सचेतन की 'सेल्फ' विधा विशेषकर बालिका गृह अथवा आपात स्थितियों में जरुरतमंद बच्चों के संबलन हेतु है जिसमें शिक्षा, जीवन कौशल, स्वस्थ्य, आजीविका, कानूनी साक्षरता, आत्मरक्षा, कला और हुनर संवर्धन आदि विषयों पर क्षमतावर्धन से लेकर जीवन के प्रति सकारात्मक सोच को पल्लवित करने, तनाव को सँभालने की दृष्टि से रचनात्मक और विभिन्न हीलिंग (Healing) प्रक्रियाओं का समावेश है |

सचेतन

(शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था)

२३, श्रीपद, रेलवे सोसायटी कॉलोनी, बजरंग नगर, कोटा (राजस्थान)